संगमतीर्थ-बैंगलूरू। "दैवी सांस्कृतिक समारोह" के दौरान ब्र.कु.लक्ष्मी, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.वीणा, फिल्म कलाकार आर.टी.रमा, राधा रामचन्द्र, मुख्यमंत्री चन्द्रु, गायक शशिधर, महापौर बी.एस.सत्यनारायण, पूर्व कन्नड़ साहित्य अध्यक्ष आर.के.नल्लूर प्रसाद एवं ब्र.कु.गणेश।

वरठी-भंडारा रोड। आध्यात्मिक संगीत संध्या में कैंडल लाइटिंग करते हुए पूर्व शिक्षण मंत्री नानाभाउ पंचबुधे, सामाजिक कार्यकर्ता नीलकांत अवधाते, जिला परिषद वंदनाताई वंजारी, सभापति वीणाताई झंझार। साथ हैं ब्र.कु.रुक्मणि, ब्र.कु.उषा एवं ब्र.कु.रमेश।

राजगढ़-म.प्र.। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा के अभिनंदन समारोह के दौरान विश्व हिन्दु परिषद के जिलाध्यक्ष डॉ. अशोक अग्रवाल, अग्रवाल समाज के जिलाध्यक्ष महेश अग्रवाल, रैली प्रमुख ब्र.कु.शक्ति, तथा युवा प्रभाग की ज़ोनल को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु.छाया।

अजमेर। शांतिदूत साइकिल यात्रा शहर में पहुंचने पर शोभायात्रा निकालते हुए ब्र.कु.संगीता, ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.शांता, ब्र.कु.जीतु, ब्र.कु.आत्मप्रकाश तथा अन्य।

डिबाई। एस.एस.पी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कुसुम। साथ हैं ब्र.कु.देवेन्द्री।

रांची। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा के दौरान अभियंता चन्द्र देव, ब्र.कु.निर्मला तथा युवा समाज सेवी महेश जैन।

यज्ञ को बनायें निर्विघ्न

-ब्र.कु. सूर्य

"यह यज्ञ जादू की नगरी बन जाएगा जब यहां से व्यर्थ सम्पूर्णतया समाप्त हो जाएगा" - यह ईश्वरीय महावाक्य सुनकर ऐसा कौन होगा जो स्वयं से व्यर्थ को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प न करे। यह यज्ञ, जो कि रुद्र यज्ञ है, जिसकी स्थापना स्वयं शिव ने डमरु बजाकर की, सभी यज्ञों को अपने में समाहित किए हुए है। स्वयं भगवान ने इस यज्ञ को रचकर इसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी पवित्र ब्राह्मणों को दी और कहा - "हे राजऋषियों, तुम इस पवित्र यज्ञ से पवित्र ब्रह्मा भोजन खाओ, यह यज्ञ तुम्हारी पालना करे और तुम वृद्धि को पाते रहो। यह यज्ञ तुम्हें मन इच्छित फल प्रदान करे।"

पवित्र ब्राह्मण इस यज्ञ की रक्षा कैसे करें? क्या बाहुबल या शस्त्र बल से? नहीं, योगबल व पवित्रता के बल से। यह यज्ञ इस कलियुग को पावन सतयुग में बदलेगा और इससे निकली विनाश ज्वाला उसमें बसे असुरों को खत्म करेगी। जो ब्राह्मण इसकी रक्षा करेंगे, आनेवाले महाकाल में यह यज्ञ उनकी रक्षा करेगा। यह यज्ञ सभी को अतुलनीय सुख प्रदान करता है, जो विश्व में शान्ति स्थापन करता है, जो अनेकों को विघ्नों से मुक्त करता है, सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो रहा है। आज तक इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में कितने ही पवित्र ब्राह्मणों ने अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया है। यह अलौकिक यज्ञ है, इसमें स्वाहा होने वाली चीज़ें भी सूक्ष्म हैं। जो व्यक्ति इसमें अपने विकार स्वाहा करते हैं, उन्हें यह यज्ञ स्वर्ण काया, दिव्य बुद्धि व शीतल मन प्रदान करता है। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी आत्माओं को स्वयं के महान मूल्य को अब ही समझ लेना चाहिए। यह ब्राह्मण परिवार भी महान है, जो कि इस यज्ञ की रचना है। परन्तु स्वार्थ वश या गलत मान्यताओं वश या स्वयं के रचे हुए कुटिल संस्कारों वश कोई ब्राह्मण आत्मा भी इस यज्ञ में विघ्नकारी बन जाए तो अनेक कठिनाइयाँ सामने आ खड़ी होती हैं।

यज्ञ में विघ्न कौन-कौन से?

वैसे तो सर्वशक्तिवान द्वारा रचे इस यज्ञ में कौन विघ्न डाल सकता है। वह स्वयं ही इसका रक्षक भी है। परन्तु चोर घर में ही हो, उत्पाती अन्दर ही छुपा हो तो कठिनाई हो सकती है। कुछ सूक्ष्म विघ्न इस प्रकार हैं -

1.अशान्ति फैलाना

हमें इस यज्ञ को 'पीस पैलेस' बनाना है। यहां आकर अनेकों को परम शान्ति का अनुभव होता है। कई बेचैन आत्माएं यहां आकर चैन की श्वास लेती हैं। परन्तु कोई ब्राह्मण अपने संस्कारों वश, गलत व्यवहार वश, अनुचित शब्दों का प्रयोग करके यहां अशान्ति फैलाए, तो उसे अवश्य ही शिव-द्रोही, यज्ञ-भक्षक माना जाएगा। यह भी सत्य है कि शान्ति के कुण्ड में अशान्ति की सामग्री डालने वाला व्यक्ति यहां भी स्वयं अशान्त रहेगा और जन्म-जन्म भी उसे शान्ति की तलाश करनी पड़ेगी।

2.वातावरण बिगाड़ना

यह पवित्र यज्ञ सभी को अलौकिक अनुभव कराने वाला है। अब भी हज़ारों आत्माएं यहां दिव्य दर्शन करती हैं। परन्तु शीघ्र ही वह समय हम देखेंगे जब यहां आते ही लोग अशरीरी हो जाया करेंगे, उनकी हिंसात्मक वृत्ति बदल जाएगी। वह तब होगा जब हम इस वातावरण को व्यर्थ से मुक्त रखेंगे। इसके विपरीत करने वाला व्यक्ति खुद को तो कमज़ोर करता ही है साथ ही वातावरण को भी प्रभावित करता है।

3.अपवित्रता - सबसे बड़ा विघ्न

इस पवित्र यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित होगी। यहां का पवित्र वातावरण सभी को निर्विकारी बनने की प्रेरणा दे रहा है। यहां आकर मनुष्य विकारों को विष अनुभव करता है। पवित्रता के बल से ही यह यज्ञ विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली है। परन्तु कोई दुर्बुद्धि अपनी वासनाओं के वश इसमें अपवित्र वायब्रेशन्स फैलाए या विकारों की अग्नि प्रज्वलित करे तो वह प्रभु-प्रेम का पात्र कभी नहीं बन सकता। परन्तु जो आत्माएं अपनी शक्तिशाली पवित्रता से इसे बल प्रदान करते हैं, वे सर्वश्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी होंगे।

4.तेरे को मेरा कहना

प्राय: सभी ब्राह्मण इस स्थिति में रहते हैं कि

जिस यज्ञ में सभी के मन स्वच्छ हो , जहां व्यर्थ बोल, संकल्प, कर्म व संस्कार भस्म हो। जब सभी ब्राह्मण, बच्चे की तरह पवित्र हो। तब यज्ञ निर्विघ्न रहेगा।

"हे प्रभु, सब कुछ तेरा"। वे अपना एक एक पैसा यज्ञ के प्रति समर्पित करते हैं। वे बड़ी-बड़ी यज्ञ शालाएं बनाने में तन, मन, धन का सहयोग देते हैं। परन्तु कोई भी लोभी या पापी मन वाला यदि भगवान की सम्पत्ति पर भी - यह मेरी है, मैंने बनाई है, ऐसी भावना रखकर अनेकों के लिए समस्या पैदा करता है तो उसे तो कहीं भी स्थान नहीं मिलेगा। उसकी दुर्गति तो निश्चित है।

5.टकराव - भयंकर विघ्न

भगवान की सेवाओं में हम टकराएं तो हमें टकराने वाला पत्थर ही कहेंगे। चाहे टकराव किसी भी कारण हो - अपवित्रता, ईर्ष्या-द्वेष, तेरे-मेरे या गलत संस्कार-व्यवहार - ये यज्ञ में भयंकर विघ्न हैं। यज्ञ को निर्बल करके यज्ञवत्सों को उदास करने वाला है। इसलिए जो भी यज्ञ-प्रेमी हैं, उन्हें स्वयं ही झुककर, कुछ सहन करके, कुछ समाकर व कुछ भुलाकर, यज्ञ को इस विघ्न से मुक्त करना चाहिए।

यज्ञ की समाप्ति कब होगी

यूँ तो हम जानते हैं कि यज्ञ तब ही सम्पूर्ण होगा जब सारी पुरानी दुनिया इसमें स्वाहा हो और नव सृष्टि का उदय हो जाए। परन्तु हम यह भी कह सकते हैं कि समाप्ति तब ही समीप होगी जब यहां सभी के मन स्वच्छ हो जाएंगे, यहां से व्यर्थ बोल, संकल्प, कर्म व संस्कार भस्म हो जाएंगे। जब यहां के ब्राह्मण, बच्चे की तरह पवित्र बन जाएंगे। परन्तु यज्ञ समाप्ति से पूर्व प्रत्यक्षता के नगारे बजेंगे और उसमें उनका ही महत्व होगा जो सदा विघ्नों से मुक्त रहे होंगे।

स्वयं निर्विघ्न तो यज्ञ निर्विघ्न

यदि यज्ञ में कोई कुछ भी सेवा नहीं करते परन्तु अपनी स्थिति को श्रेष्ठ व निर्विघ्न रखते हैं तो वे भी यज्ञ के सहयोगी हैं। जब एक मनुष्य की अपनी स्थिति में विघ्न होता है तो वह दूसरों को विघ्न अवश्य डालता है। चिड़चिड़ा मनुष्य दूसरों से अवश्य टकराता है। जिसमें काम-क्रोध के किटाणु हों वह अवश्य ही उनका प्रसार करता है। यदि जीवन निर्विघ्न नहीं तो सच्चा सुख भी नहीं। आप देख लें कि विघ्नों के बीज आपने संकल्प रूप में खुद तो बोये हुए नहीं हैं? विघ्न तो आएंगे ही पर उन्हें धैर्यता-पूर्वक पार कर लेना यही निर्विघ्न स्थिति है।

योग व पवित्रता का सहयोग दो

शक्तिशाली आत्माएं अपनी श्रेष्ठ स्थिति से बहुत कुछ कर सकती हैं। परन्तु ऐसा न हो कि जिन्होंने जीवन स्वाहा कर दिया वे विघ्न-युक्त हों और घर-गृहस्थ में रहने वाले निर्विघ्न हों। ऐसा हुआ तो संसार ऐसी आत्माओं पर ज़रूर हंसेगा। जीवन स्वाहा करने वालों को ही महान योगी व पवित्रता की देवी बनना चाहिए। यदि यह दो शक्तियां हमारे पास होंगी, तो चाहे कोई कितनी भी गुटबाज़ी करे, कितनी भी गलत शिकायतें करे, कुछ भी नहीं कर पाएगा। तो आओ, यज्ञ और स्वयं को निर्विघ्न बनाने के लिए हम प्रतिदिन कुछ विशेष योगाभ्यास करें। इस स्वमान को बढ़ाएं कि हम तो खुद विश्व को विघ्नों से मुक्त करने वाले हैं, तब भला हमारे पास विघ्न कहां से आए। हमने पवित्रता का पथ चुना है, सर्वस्व दांव पे लगाया है, कहीं हमें तथाकथित पाण्डवों की तरह भटकना न पड़े।

हे यज्ञ प्रेमियों

हमारा सम्बोधन उस महान व पवित्र ब्राह्मण परिवार को है, जो जहां-जहां इस यज्ञ से संलग्न है। ज़रा विचार करो -

- तुम यहां क्यों आए हो
- तुमने अपना जीवन कुर्बान क्यों किया
- तुमने यह त्याग-तपस्या का पथ क्यों चुना

चलो चलें स्वचिंतन के तले में... अब भी क्या व्यर्थ की ओर झुकाव है.. तुम्हें अब चाहिए क्या... सबकुछ तो तुम्हें प्राप्त है... कहीं ऐसा तो नहीं कि अपना सबकुछ छोड़कर तुम सन्यासियों की तरह पुन: माया में उलझ गये हो। भगवान ने तुम्हें यज्ञ की ज़िम्मेदारी दी है योग्य जानकर। अब भगवान से बेवफाई न करना... उसकी आशाओं के दीप जलाना। स्वयं भी उमंग में रहना व औरों को भी व्यर्थ से मुक्त करना।

भगवान ने स्वयं आह्वान किया है - "अब मेरे यज्ञ को निर्विघ्न बनाओ" - कितना सुन्दर व भाव भरा आह्वान है... कौन आगे आएंगे, कौन त्याग करेंगे... जो करेंगे वे महान होंगे, पूजनीय बनेंगे। भगवान की सुनो तो वह तुम्हारी जन्म-जन्म सुनेगा।